

Sapne Me Chut Chudai Ka Maja- Part 2

Added : 2015-12-26 13:51:17

मुझे ऐसा कुछ कहने में हरज नहीं था। मैं बाद में क्या करने वाला था, प्रोफेसर को कौन बताने वाला था.. इसलिए मैंने प्रोफेसर को बोला।

'लेकिन प्रोफेसर कसि लड़की के दिल में क्या है उसको जानने के लिए तुम्हारी वो दवा बहुत हेल्प करेगी। दस महीने से चोदने के लिए कोई माली नहीं है.. साला मेरा लण्ड भी अब मुझे गाली दे रहा है।' तभी प्रोफेसर बोला- ठीक है 2-4 दिन रुक.. हो सकता है कितेरी और मेरी दोनों की समस्या हल हो जाए।

इतना कहकर वो मेरी ओर देखकर मुस्कुराने लगा।

अब आगे..

प्रोफेसर की बात सुनकर अब मेरी नजर हॉस्टल में रहने वाली लड़कियों पर रहने लगी और प्रोफेसर की बात सुनकर मैं अपने दिन गनि रहा था।

करीब पन्द्रह दिन बाद प्रोफेसर की मेहनत रंग लाई और उसने जो एक्सपेरीमेंट किया.. वो वास्तव में जीवन में रंग लाने वाली थी। सफल परीक्षण के बाद उसने वो दवा मुझे दी। चूँकि उसकी बनाई हुई दवा की एक बूंद से ही मैं चार से पाँच घण्टे तक गायब रह सकता था.. इसलिए प्रोफेसर ने मुझे वो दवा एक छोटी सी शीशी में दी.. जिसमें यह कहा जा सकता था कि पन्द्रह से बीस बूँद ही थीं। लेकिन देने से पहले कसि को न बताने का वादा करवा लिया और मैं रात को उस दवा को आजमाने जा रहा था।

करीब रात को दस बज गए थे.. हॉस्टल में रहने वाली सभी लड़कियों के कमरे की लाइट बंद हो चुकी थीं। बस एक कमरे की लाइट नहीं बंद नहीं थी.. उस कमरे में रहने वाली लड़की.. जिसका नाम सूजी था। वो पाँच फिट छः इंच लम्बी एक मस्त लड़की थी। गदराया हुआ बदन था.. उसके बाल लम्बे-लम्बे.. तनकि साँवली सलोनी सी.. नाक एकदम सुतवां नुकीली.. गहरी आँखें.. पतले-पतले होंठ.. लगभग 32-30-32 का उसका फगिर होगा।

मैं उसके कमरे में गया और की-होल से झाँक कर देखा.. तो वो कुछ पढ़ रही थी और अपने जस्म को सहला रही थी। मैं सब कुछ तो ठीक से नहीं देख पा रहा था, लेकिन इतना तो तय था कि वो अपने कर्त प्रवेश को रगड़ रही थी।

अब मैं एक रसिक के साथ उस दवा को अपने ऊपर आजमाने के लिए तैयार था। मैंने एक बूँद दवा ली.. उसको पिया। दवा थोड़ी कड़वी थी और मुझे अपने शरीर में ऐसा कोई परिवर्तन नजर नहीं आ रहा था.. जैसा कि पिक्चरों में होता है।

फरि मैंने दो मिनट का इंतजार किया और उसके दरवाजे को खटखटा कर कनारे हो गया। मैंने सोच रखा था अगर मैं उसको दिखाई पड़ता हूँ तो मैं बोल दूँगा कि तुम्हारे कमरे की लाइट क्यों जल रही है।

तभी दरवाजा खुला.. आवाज आई- कौन है?

मेरी तरफ उसकी नजर तो थी.. लेकिन शायद मैं उसे नजर नहीं आ रहा था। इसलिए वो थोड़ा बाहर आई और गैलरी के दोनों ओर देखा और अन्दर आकर बड़बड़ाने लगी- रात में भी परेशान करते हैं।

अब मुझे विश्वास हो गया था कि वो मुझे नहीं देख पा रही है.. इसका मतलब मैं गायब हो चुका था।

उसने फरि से दरवाजा बंद किया लेकिन उससे पहले मैं कमरे में दाखलि हो चुका था।

टेबल लैम्प को ऑन किया.. फरि मेन लाइट बंद कर दी और अपनी जगह आकर बैठ गई, फरि से पढ़ने

में लग गई.. वो एक चार-पाँच पन्ने का प्रिन्ट आउट था.. उसको वो पढ़ रही थी और अपने योनिप्रदेश को रगड़ रही थी।

खास बात यह थी कि वो प्रिन्ट आउट अन्तर्वासना का था और मेरी ही लखी हुई कहानी 'मेरी सुहागरात की चुदाई' को पढ़ रही थी, उसके साथ ही उसके चेहरे पर कंपन सी होती जा रही थी और काफी उन्माद में आती जा रही थी। वो जतिनी उन्माद में आती.. उतनी ही तेज मध्यमा उंगली को अपनी चूत से रगड़ती और साथ ही बड़बड़ाती जाती- क्या सक्सेना जी.. क्या मस्त कहानी लखी है।

जैसे ही उसने पढ़ना बंद किया.. वैसे ही 'आह..' की आवाज से साथ उसका जस्म ढीला पड़ गया। मैंने देखा कि सूजी ने जो पैन्टी पहनी थी.. वो काफी गीली हो चुकी थी.. क्योंकि वो अपनी मध्यमा उंगली को अपने अंगूठे से रगड़ने लगी। उसके बाद सूजी ने अपनी पैन्टी उतारी और उसको सूँघने लगी.. फिर जीभ का थोड़ा सा हिस्सा बाहर किया और गीली पैन्टी को हल्के से टच किया मानो उसके जस्म से निकली हुई मलाई का वो स्वाद ले रही हो।

जैसे ही उसके जस्म से निकली हुई मलाई उसके जीभ से टच हुई.. उसकी आँखें अपने आप बंद हो गईं। ऐसा लगा कि उसको अपनी मलाई का स्वाद मलि गया हो।

इसलिए सूजी ने तुरन्त ही उसकी चड्डी में जतिनी जगह गीली थी.. उसको मुँह में भर लिया और उसको लॉलीपॉप की तरह चूसने लगी।

अपनी चड्डी को चूसने के बाद उसने उसको एक कनारे फेंक दिया.. मैंने तुरन्त ही उसकी चड्डी को उठा लिया। चड्डी में कोई खास महक नहीं थी.. लेकिन उसकी चड्डी में सूजी की गर्मी बहुत थी।

तभी मुझे ध्यान आया.. कि अरे मेरी इस हरकत से सूजी को मेरे उसके कमरे में होने का अहसास न हो जाए.. मैंने तुरन्त ही उसकी चड्डी को एक कनारे फेंका और अपनी नजर सूजी की तरफ की.. तो देखा कि सूजी ने मुझे देखा नहीं था, वो तो बाथरूम की तरफ जा रही थी।

बाथरूम में पहुँचकर उसने अपनी स्कर्ट को ऊपर उठाया और पेशाब करने बैठ गई।

'शुरुरुरुर ररररर..' की आवाज से उसकी धार छूटी।

पेशाब करने के बाद वो वापस आकर पलंग पर लेट गई। बार-बार वो करवट बदल रही थी, लेकिन उसे नींद नहीं आ रही थी। कभी वो तकिए को अपने सीने के ऊपर रखती.. तो कभी सरि के नीचे लगाती। लेकिन ऐसा करने पर भी उसे नींद नहीं आ रही थी।

फिर उसने अपना टॉप उतारा.. ब्रा के ऊपर से ही चूचे सहलाए और सोने की कोशिश करने लगी। लेकिन शायद कहानी पढ़ने के बाद उसके जस्म में लगी हुई आग शान्त नहीं हुई थी.. इसलिए वो अभी करवट बदल रही थी। थोड़ी देर बाद उसने अपनी ब्रा उतारी और सीधी होकर लेट गई।

उसकी चूचियों को देखकर मैं तो दंग रह गया। क्या मस्त चूचियाँ थीं उसकी.. ऐसी फैली हुई थीं कि मानो दो प्लेट के बीच में एक-एक काला अंगूर रखा हो.. बड़ी ही आकर्षक लग रही थीं।

खैर.. सूजी अब अपने चूचुक को दोनों हाथों की दोनों उंगलियों से लेकर मसल रही थी। फिर उसके दोनों हाथ नाभिकी ओर फसिलते जा रहे थे। कभी उसकी हथेली नाभिकी ओर फसिलती.. तो कभी फिर अपनी चूची की ओर आती।

अन्ततोगत्वा.. उसके दोनों हाथ थोड़ा सा नाभि से ओर नीचे होते हुए स्कर्ट से अन्दर जाने लगे। लेकिन ये क्या? उसने हाथों को वापस अपनी तरफ खींचा और अपने अन्तमि वस्त्र यानिकी स्कर्ट को भी उतार दिया।

उसके जस्म के एक-एक हिस्से की जतिनी भी तारीफ करूँ.. उतनी कम है, वास्तव में वो काम की देवी दिखाई पड़ रही थी, उसकी चूत क्या थी.. बिल्कुल फूली हुई पॉव की तरह थी, उसकी चूत में बाल का

एक रोआँ तक न था। पूरे जस्मि में उसके चकिहनाहट थी.. उसका जस्मि कांच सा चमक रहा था।

अब सूजी का पूरा हाथ उसकी जाँघों के आस-पास था, कभी वो अपने जाँघों को सहलाती.. तो कभी चूत को.. तो कभी चूची को मसती से मसलती।

पछिले दस मिनट से उसका यही चल रहा था।

आखरिकार उसने अपनी दोनों टाँगों को मोड़ा और अपनी मध्य उंगली को चूत के छदिर में ले गई और उंगली को अन्दर-बाहर करने लगी।

फरि धीरे से उंगली को बाहर निकाला और अपने नाक के पास ले गई और उसको सूँघने लगी। फरि धीरे से उसी उंगली को अपने मुँह के अन्दर डालकर चूसने लगी। उंगली चूसने के बाद फरि उसने अपनी बुर में उंगली डाली और अन्दर-बाहर करने के बाद उसने फरि उंगली को चूसा।

इस तरह उसने कई बार कयि।

अब वो अपनी चूत में उंगली बहुत तेज-तेज चलाने लगी.. मुझे लगा किवो खल्लास होना चाहती है..

इसलिए वो पूरी ताकत से और तेज-तेज उंगली को अन्दर-बाहर करने लगी।

इधर मेरा भी अपने ऊपर से काबू खत्म होता जा रहा था। चूँकि मैं सूजी को इस समय चोद नहीं सकता था.. इसलिए मेरा भी हाथ लौड़े के ऊपर चल रहा था। उसी समय सूजी के जस्मि ने अंगड़ाई ली और शान्त हो गई। उसके हाथ में उसका माल लगा था और काफी कुछ बसितर में फैल गया था। हाथ में लगा हुआ माल उसने अपने मम्मों में लगा लयि।

उधर मैं भी झड़ने के कगार पर पहुँच चुका था। मैं सूजी के बसितर के पास पहुँचा.. उसकी टाँगें अभी भी उठी हुई थीं। मैंने वहीं पर.. जहाँ किसूजी का माल गरि था.. उसी के ऊपर अपना माल गरि दयि।

अब सूजी ने अपने सर से तकयि निकाली और जाँघों के बीच फंसा कर सो गई। मैंने भी पाँच-दस मिनट देखा किकोई नई हरकत हो.. लेकिन अब शायद उसके जस्मि को शांति मिलि गई होगी इसलिए मैं दरवाजा खोलकर बाहर आ गया और उसके दरवाजे को इस तरह से लॉक कर दयि कगिलती से भी कोई दूसरा उसके रूम में न घुस जाए।

अब एक का तो जुगाड़ मेरे पास हो गया था। करीब रात को एक बज गया था.. मुझे लगा कसिब सो रहे होंगे.. इसलिए मैं भी अपने रूम में आकर सो गया।

सुबह उठकर मैं सीधे लैब पहुँचा.. जहाँ प्रोफेसर अपना काम कर रहे थे। थोड़ी देर बाद कालेज के लड़के-लड़कयिँ प्रेक्टिकल के लिए लैब में आने लगे।

आज सभी लड़कयिँ मुझे बहुत सेक्सी लग रही थीं। उनकी घुटनों से ऊपर उठी हुई स्कर्ट को देख कर मानो ऐसा लग रहा था किवो स्कर्ट मुझे बुला रही हों और कह रही हों.. कवि मेरे राजा शर्माओ नहीं.. आओ, मुझे ऊपर करके इस लड़की की बुर को चोद दो।

मैंने प्रोफेसर से 2-3 घंटे की छुट्टी मांगी और चारों ओर देखा.. पाया कसिी का ध्यान मेरे ऊपर नहीं है और प्रोफेसर ने भी मुझे छुट्टी देकर फरि से अपने कार्यो में मन लगा लयि।

मैं चुपचाप बाथरूम में गया और प्रोफेसर की दी हुई दवा की एक बूँद को पी गया।

मतिये, मेरी यह कहानी मेरे एक सपने पर आधारति है.. मैंने अपनी लेखनी से आप सभी के लिए एक ऐसा प्रसंग लिखना चाहा है.. जो मानव मात्र के लिए सम्भोग की चरम सीमा तक पहुँचने की सदा से ही लालसा रही है।

मुझे आशा है कवि आपको कहानी पसंद आएगी।

आपके ईमेल की प्रतीक्षा में

आपका शरद सक्सेना

कहानी जारी है।

saxena1973@yahoo.co.in

« [Back To Home](#)

For more sex stories Visit: [AntarVasna.Us](#)